JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मधु कांकरिया कृत खुले गगन के लाल सितारे उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन"

अनुष्का प्रदीप पाचंगे,
पी.एच.डी .शोध- छात्रा,
एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय,
मुंबई -२०

शोध –सार(Abstract): मधु कांकरिया समकालीन हिंदी साहित्य की एक प्रतिष्ठित और संवेदनशील लेखिका हैं। वे अपने लेखन में मानवीय रिश्तों, स्त्री-अस्मिता, सामाजिक विसंगतियों और बदलते जीवन मूल्यों को बड़ी गहराई और मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं में जीवन के विविध रंग, सामाजिक सरोकार और यथार्थ का सशक्त चित्रण मिलता है।वे मूल रूप से कोलकाता की निवासी हैं और वहीं से लेखन यात्रा की शुरुआत की। हिंदी साहित्य में उनका योगदान उपन्यास, कहानी, निबंध और लेखों के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनके लेखन में स्त्री की संघर्षपूर्ण यात्रा और उसकी संवेदनाएँ विशेष रूप से उभरकर आती हैं।

कुंजी शब्द (Key Words):मधु कांकरिया,खुले गगन के सितारे,इंद्र,मणि,गंगाबाई,गोविन्द दा आदि|

शोध पद्धति (Rsearch Methodology) :विवेचनात्मक,विश्लेष्णात्मक पद्धति|

प्रस्तावना (Introduction):मधु कांकरिया जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों को भी गंभीर सामाजिक प्रश्नों से जोड़ने की अद्भुत क्षमता रखती हैं।उनकी भाषा सरल, मार्मिक और प्रभावशाली है, जिसमें लोक जीवन की झलक भी दिखाई देती है।मधु कांकरिया हिंदी की ऐसी साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज, स्त्री-जीवन और मानवीय संबंधों के अनेक पहलुओं को गहनता से अभिव्यक्त किया है।नक्सलबाड़ी से उठी एक चिंगारी शोषणविहीन समतावादी समाज और मानवीय गरिमा से जीवन जीने योग्य वातावरण की रचना की आग को अपने अंतरतम में छिपाए बैठी थी और देखते-देखते एक भीषण दावानल में सामने आई,लेकिन अंतत: उसकी परिणिति क्या रही- आज इतिहास का एक अध्याय बन चुकी है|

प्रस्तुत उपन्यास इसी के आधार पर बुनी एक मर्मस्पर्शी कहानी है,जो उस दौर के जीवनानुभवों और घटनाओं-परिघटनाओं के बीच से गुजरते हुए,लेखिका को निकट से होते हुए आकार लेती है| उपन्यास की

शैली और भाषा का प्रवाह पाठकों को अपने साथ बहा ले जाने की क्षमता के लिए अद्वितीय है|मधु कांकरिया जी का प्रथम उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे'सन् २०११ में प्रकाशित हुआ है|इसके माध्यम से लेखिका तत्कालीन युग की सामजिक,सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों का जीवंत वर्णनकरती हैं|यह उपन्यास कई उपशीर्षकों में विभक्त है| जैसे काल को समर्पित एक मुलाक़ात,धीरे-धीरे उजास :टेकऑफ लेता अनुभवों का एक संसार,कौन गली गयो श्याम?,सफर अतीत की ओर,सरे-राह चलते-चलते,सूरज मेरी मुंडेर पर,गोरी सेज पर,टीचर ऑफ अनलार्निंग,जियो मेरी दोस्त,आई लव यू,मणि जो सिर्फ एक थ्योरी थी,ताजमहल से लेनिन की समाधि बना इंद्र,मनुष्य,प्रकृति और ईश्वर,भूख ही क्रांति,ह्येयर इज द एक्शन पार्ट!,जादू-टोना –क्रोसिन और क्रॉस,ईशु ने भगाया भूत,यूनियन जैक और लाल सलाम,स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी और लाल झंडा,जो हुआ वह यह था,घिरते देखा बादलों को,बरानगर-काशीपुरा किलिंग ऑफ़ अगस्त १२-१३,१९७१ ,नेपथ्य का यथार्थ,अमत्य सेन-एक नक्सलवादी?गुजरे हुए कारवाँ के बाद,पराजय नहीं,तुम्हारी याद वह जो जीना चाहती थी,क्षमा करें ऋषिगण!,जो देखा वह यह था,अपने-अपने आर्कमिडीज,दीक्षा,बेड नंबर ११,तुम लिखो,कॉमरेड,फिर एक अंधेरी रात तथा उत्तरार्ध में समुद्र शेष है और अल्ट्रा ईगो जैसे खंड हैं|

मधु कांकरिया जी के सभी उपन्यास जीवन की वास्तविकताओं को बेहतरीनी के साथ चित्रित करते गए हैं| अपने उपन्यासों में मधु कांकरिया ने अपनी बातों को विस्तार पूर्वक रखा है| उनकी औपन्यासिक कृतियों में पुरुष प्रधान समाज के प्रति आक्रोश दिखाई देता है| वे नारी स्वतंत्रता की पक्षधर रही हैं| उन्होंने ग्रामीण समाज की नारी की सामाजिक स्थितियों तथा वातावरण की समस्याओं से ही अवगत नहीं कराया है, बल्कि वे उन स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने पर भी अधिक बल देती है| मधु कांकरिया ने नारी शक्ति के नये आयाम खोजने का सार्थक प्रयास किया है| इनके नारी पात्र शोषण से शोषित होने वाले नहीं बल्कि अपनी आवाज उठाकर विद्रोही को परास्त करने वालों में से हैं| उनके लेखन की एक विशेषता उनका साहसिक लेखन भी है| उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से मनुष्य की अनकही पीड़ाओं को ही नहीं दर्शाया है वरन् मानव जीवन के उन सभी आयामों को भी दिखाया है जिसका वर्णन करने का साहस पुरुष लेखकों में भी बहुत कम पाया जाता है| मधु कांकरिया अपने साहसिक लेखन के बारे में स्वयं बताती हैं कि साहसिक लेखन साहसिक जीवन से ही आता है| इसके अलावा समाज से मिली कसावटें भी उनमें छटपटाहट पैदा करती हैंI

मधु कांकरिया का चर्चित उपन्यास '**खुले गगन के लाल सितारे**' नक्सलवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया महत्वपूर्ण उपन्यास है| यह उपन्यास एक ओर जहाँ नारी विमर्श का नया दायरा खोलता है तो दूसरी ओर इसमें राजनीतिक परिवेश का अंकन सूक्ष्मता से किया गया है और कुछ कहानियों में भी इसका चित्रण है पर दाल में छौंक के बराबर हीI आज के जीवन में यह राजनीतिक तत्व इस

कदर छाया है कि इसने सभी को डंस लिया है, और इससे बचकर कोई जीवन नहीं जीया जा सकता है| न ही कोई रचना ही हो सकती है| मधु कांकरिया में भी इस सहज अनिवार्यता के चलते राजनीति आई है जो उनके कथा साहित्य का न तो कोई कारण बनती है, और न ही परिणाम| परन्तु वह परिस्थिति व गति का प्रमाण तो बनती है| "पाड़े (मुहल्ले में गोविन्द दा को सभी पहचानते हैं, जिन दिनों वेग पर था नक्सलवादी आन्दोलन, कई बार घेरा था पुलिस ने गोविन्द दा के मकान को... गोविन्द दा का ही क्या कँटीले तारों से इस गली के कई मकानों को एक साथ घेर लेती थी पुलिस और फिर उन तारों में विद्युत धारा प्रवाहित कर दी जाती जिससे कोई भागना भी चाहे तो कँटीले तारों के विद्युत झटके से वहीं ढेर हो जाए... विद्युत समाधिI"[१]

इस उपन्यास में नक्सलवादी आन्दोलन और क्रांतिकारियों की दर्दनाक जीवन दास्तां है| समाज जो नक्सलवादी आन्दोलन और क्रांति के बदलते स्वरूप की स्पष्ट करता है| इनके उपन्यास की विशेषता यही है कि समाज की बदलती परिस्थितियों का स्पष्ट दृश्य उनकी इस रचना में मिलता है| सदियों से पीड़ित, शोषित समाज में परिवर्तन की अदम्य गाथा की लालसा उपन्यास है खुले गगन के लाल सितारे | समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े मनुष्य को पहली बार मनुष्य की गरिमा देने का प्रयत्न मधु कांकरिया ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से किया है| निरंतर पिसता, अपमानित एवं शोषित होता रहा वर्ग अपने अधिकारों के लिए लड़ता नजर आता है| वह पूरी तरह से न्याय
और समानता स्थापित करना चाहता है| उपन्यास में आदिवासी, पिछड़े तबके का भी यथार्थपरक चित्रण किया गया है| जिन्हें सारी उम्र कठिनाइयों तथा अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है| "जिन्दगी कितनी विस्मयकारी है| सोच रहे थे नवल बाबू| मणि को पूरे धैर्य और मनोयोग से सुना था उन्होंने| पर किसी भी प्रकार का परामर्श नहीं दे पाए थे वे| दे भी नहीं सकते थे| मणि, इंद्र के साथ अपने संबंधों की नौका को कितनी दूर तक ले जाए, यह निर्णय तो अन्ततः माणि को ही लेना था| हाँ नवल किशोर बाबू कुछ ऐसे समानांतर प्रकाश स्तंभों से मणि को जरूर मिलवा सकते थे| जिनके जीवन के सरोकारों में भी अनंत सामाजिकता थी, और जो अपने अन्दर के आत्मदान से इस दुनिया को कुछ और सुन्दर बनाने में लगे हुए थे|"[२]

मधु कांकरिया के इस उपन्यास के माध्यम से बदलता सामाजिक परिवेश और उस परिवेश के बदलते नैतिक अनैतिक, सामाजिक मूल्य लगभग उनके कई उपन्यासों के विषय बन चुके हैं| संसार की कोई भी सामाजिक व्यवस्था स्तर रहित नहीं है| अर्थ, जाति, धर्म, लिंग, भेद आदि से प्रस्तुत स्तरीकरण प्रायः समाज में सभी ओर देखा जा सकता है| मधु कांकरिया का उपन्यास साहित्य वर्तमान आधुनिक भाव

बोध से सराबोर मंडित समाज का ही साहित्य है| "पर क्या तुम जानती हो कि धर्म के नियम कानूनों से

बँधी उस दुनिया में तुम एक बार घुस गई तो वहाँ से ससम्मान लौटने का कोई वीज़ा - पासपोर्ट तुम्हें नहीं मिलेगा - लगभग असंभव|"[३]

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में देवकीनंदन खत्री के ऐय्यारी - तिलिस्मी उपन्यासौ का नगाड़ा बज रहा था| उपन्यास ने करवट बदली और बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक यथार्थवादी स्वरूप लेकर हिन्दी उपन्यास में नारीवादी स्वर लेकर प्रस्तुत हुआ है| कई स्त्री रचनाकारों ने उपन्यासों में अपने साहस एवं आत्मविश्वास की जादुई शक्ति से हरित क्रांति को जन्म दिया है| मधु कांकरिया के उपन्यास चिन्तन और जीवनानुभवों से एक साथ जुड़े हुए हैं| इस सहज संवेदना के संसार में आधुनिक जीवन का समस्त बौद्धिक तनाव मूल सत्यों के साथ उजागर हुआ है| सामाजिक सम्पर्क में मानव की विवशताजन्य प्रस्तुत समायोजन सामाजिक व्यवस्था को तो उत्कर्ष प्रदान करता है| आदर्श के समक्ष यथार्थ का दमन मानव को तनाव एवं घुटन प्रदान कर उसकी वास्तविक प्रगति में कितना अवरोध उत्पन्न करता है, वह अद्यतन समाज में दर्शनीय तथा चिन्तनीय है| "टॉलस्टाय ने एक जगह कहा था जीवन न मनोरंजन स्थल है, न ही आँसुओं की खाना जीवन एक संवेदना है| और कथावाचक का निश्चित मत है कि इस संवेदना को महसूस करने की शुरुआत हर जीवन में तभी शुरू हो जाती है,जब वह अपने जीवन के प्रथम असफल प्रेम से गुजरता है|"[४]

लेखिका मधु कांकरिया द्वारा लिखा गया यह उपन्यास '**खुले गगन के लाल सितारे**' आतंकवादियों, नक्सलवादियों तथा आदिवासी वर्ग के साथ-साथ कमजोर वर्ग के लोगों

की असामान्य जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया है| "पिछले आठ-दस वर्षों से बिहार के आदिवासी अंचलों में कार्यरत आदिवासियो ं के कल्याण के लिए समर्पित एक ऐसी ही संस्था वन बंधु कल्याण निकेतन से जुड़े हुए थे| उसी संस्था के संस्थापक श्री आलोक जी भगत, नवल बाबू के जीवन के प्रथम प्रेरणा पुरुषा ! उनसे जुड़कर नवल बाबू की निःसंतान जिन्दगी में एक जबर्दस्त सुखद, सुहाना, सार्थक एवं तृप्तिदायक मोड़ आया था| दोनों पति-पत्नी जब-तब निकल जाया करते, बिहार के गुमला लोहरदगा जैसे आदिवासी अंचलों की ओरI"[५]

यह मधु कांकरिया का पहला उपन्यास है जिसमें नक्सलवादी आंदोलन क्रांतिकारियों का दर्दनाक जीवन लेखिका ने अंकित किया है| मध्य कलकत्ता के हाथी बागान इलाके के सन् १९७०-७२ के लाल गली नामक इलाके के गरम दिनों का चित्रण ही इस उपन्यास की खासियत है| लेखिका के सगे भाई भी इस आन्दोलन से जुड़े होने के कारण शायद इन्होंने बेहद नजदीकी से इसे महसूस कर सारी

घटनाओं का अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है| खुले गगन के लाल सितारे भी मुख्य पात्र मणि एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है, जो अपने पारिवारिक संघर्ष के बावजूद अपनी अलग पहचान स्थापित कर इस दुनिया से संघर्ष करती दिखाई देती है| कम्युनिस्ट आन्दोलन से जुड़ी मणि को अनेक विरोधियों का भी सामना करना पड़ता है| फिर भी वह अंत तक अपना पहला प्यार इंद्र जो कि नक्सलवादी आन्दोलन में गायब हो चुका है| उसकी तलाश में लगी रहती है| परिवार वालोंं के दबाव के बावजूद वह शादी करने से मना कर देती है|

"उन्हीं दिनों मणि ने उस कुछ-कुछ जाने हुए प्रदेश के चप्पे-चप्पे को जानने की भरसक चेष्टा की थी जिसे पिता कहते हैं| हुआ यह था कि एक बार परिवार के किसी सामूहिक कार्यक्रम में जब गंगाबाई बीच मेहमानों के ही अमरनाथ बाबू की डपट बैठी थी तो पिता के जुझारु अतीत से वाकिफ माणि के काका आहत हो बैठे थे, भाई जी की सारी तेजस्विता हर ली, इस भौजाई ने| बात-बात पर प्रताड़ित पैसे-पैसे के लिए माँ का मुँह जोहते, थके हारे भग्न आवेश से पिता में कभी तेजस्विता भी थी| पिता को लेकर पहली बार दया की जगह विस्मय एवं श्रद्धा के भाव जागे थे माणि में|"[६]

सन् १९७२ तक नक्सलवादी आन्दोलन का तूफान थम चुका होता है| एक १९७२ तक नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल लाल सितारों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत करने में नायिका ने सफलता प्राप्त की है| भावनाओं और विचारों, दुख और आक्रोश, भय और साहस के अत्यंत महीन धागे से बनी यह औपन्यासिक संरचना हमें नक्सलवादी आन्दोलन का वह दहला देने वाला विवरण देती है जो इतिहास में सामान्यतः नहीं लिखे जाते| साथ ही कलकत्ता के एक मध्यवर्गीय परिवार की उन गलाघोटू परिस्थितियों का विवरण भी इस उपन्यास में किया गया है| जिनका मुकाबला विचार और विद्रोह के हथियार करें तो करें, वैसे तो संभव नहीं जैसा कि उपन्यास में माणि और कुछ साहसी आत्माएँ अपने जीवन में करती है| "अभी! आँखों में अकस्मात उभर भाई आर्द्रता को आँखों की कोटरों के भीतर ही सोख लेने का प्रयत्न करते हैं वे, दिलीप विश्वास| एक नाम जो आज इतने वर्षों बाद भी धड़कन की तरह जिन्दा था उनके अन्दर| एक दीर्घ उल्छवास ले कहने लगे थे बहुत दरिंदगी हुई उसके साथ, लेकिन था वह भी एक जाँबाज मर्द, कलंदर बाहर से पराजित हुआ, आँखे निकाल ली गई लेकिन अंत तक अपराजित रहा भीतर से|"[७]

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास की नायिका मणि की छोटी बहन 'पारसी' का मांगलिक होने के कारण उसका ब्याह संभव नहीं हो पाता है| बहुत कठिनाइयों के बाद उसका ब्याह तय होता है, लेकिन एक हादसे में जल जाने के बाद उसका ब्याह टूट जाता है| इसी विरक्त के चलते "पारसी साध्वी जीवन अपनाने का कठोर निर्णय ले लेती है| मणि उसको बार बार समझाने का प्रयास करती

है- "धर्म के इस शुष्क, कर्महीन और भावना शून्य रास्ते या यदि तुम सिर्फ इसी कारण जा रही हो कि तुम्हारी शादी संभव नहीं तो याद रखो, शादी ही जीवन की अन्तिम उपलब्धि नहीं और विष पीकर विष ही दिया तो क्या दिया| कड़वाहट पीकर भी जीते जाना ती जीवन है| बाकी सब पलायन है| फल देने वाला पेड़ तो तुम बन सकती हो| जाना है तो सेवा के मार्ग पर जाओI"[८]

मधु कांकरिया का यह उपन्यास स्त्री की उन विडंबनाओं तथा आंतरिक कुंठाओं को प्रदर्शित करता है, जो कि सामान्यतः न कहा जा सकता है और न कहने या सहने योग्य ही होता है| इस उपन्यास में स्त्री की जो तीसरी भूमिका प्रदर्शित हुई है, सच माने तो

इसी तथ्य से स्त्री विमर्श की व्युत्पत्ति भी हुई है| मधु कांकरिया के उपन्यासों में स्त्री अपनी राह बनाती हुई पितृसत्तात्मक व्यवस्था की चुनौती देती नजर आती है| दरअसल तीसरी स्थिति शिक्षित कामकाजी नारी की है, जो अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत है| पुरुषों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का विरोध वह बिना किसी झिझक और निडरता के करती है|

निष्कर्ष:अतः कहा जा सकता है कि इन बातों को मधु कांकरिया के इस औपन्यासिक संसार में दृढ़ता के साथ स्थान दिया गया है| अपने उपन्यासों के माध्यम से ही उन्होंने अनेक आधुनिक विषयों एवं मानव समाज के जीवन के साथ-साथ विशेषकर स्त्री जीवन के विविध पहलूओं का चित्रण बहुलता के साथ किया गया है I मधु कांकरिया ने अपने पात्रों के चरित्रों को ही माध्यम बनाकर सत्य को उद्घाटित करने की कोशिश की है| जिससे कांकरिया जी की रचनाएँ यथार्थ के धरातल पर सटीकता के साथ साहित्य में अपना अमूल्य योग दे सकें|

सन्दर्भ :

०१) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन संस्करण २०११

०२) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन पृष्ठ संख्या -९२

०३) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन: पृष्ठ संख्या – १५३

०४) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन : पृष्ठ संख्या – ४३

०५) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन : पृष्ठ संख्या – ९२

०६) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन : पृष्ठ संख्या - ५५

०७) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन : पृष्ठ संख्या - १२८

०८) खुलेगगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया-पृष्ठ संख्या-०७, किताब घर प्रकाशन : पृष्ट संख्या - १५३